हिन्द मह मरत

विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ		अशुद्ध		शुद्ध
१४०६	...	कीचक-वध	...	उपकीचकों का कीचक के शव को देखना।—पृ० १४०६
१४०९	...	सुशर्मा-वध	...	सुशर्मा का परास्त होना।—पृष्ठ १४१६
१४९९	...	उद्योगपर्व—७ वां अध्याय।—पृ० ५५		शल्य का प्रसन्न होकर कर्मचारियों से पूछना।—पृष्ठ १४९९
१५०२	...	उद्योगपर्व—८ वां अध्याय।—पृ० ५६		इन्द्र का अप्सराओं को त्रिशिरा का तपभङ्ग करने को भेजना।—पृष्ठ १५०२

विषय-सूची

रंगीन चित्रों की सूची

विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

विषय-सूची

भीष्मपर्व

(जम्बूखण्ड निर्माणपर्व)

विषय-सूची

रंगीन चित्रों की सूची

विषय पृष्ठ विषय

विषय-सूची

विषय-सूची

रंगीन चित्रों की सूची

रंगीन चित्रों की सूची

इक्कीसवाँ अध्याय

भीमसेन और द्रौपदी की बातचीत

भीमसेन ने कहा—तुम्हारे लाल और कोमल हाथ ऐसे कड़े हो गये हैं, उनमें ढट्ठे पड़ गये हैं ! मेरे बाहुबल और अर्जुन के गाण्डीव धनुष को धिक्कार है ! महाराज युधिष्ठिर उपयुक्त समय की राह देख रहे हैं; नहीं तो मैं विराट की सभा में ही गजराज की तरह लात मारकर दुरात्मा कीचक का सिर ज़मीन में घुसेड़ देता। मैंने तो उसी घड़ी सारे मत्स्यराज्य का विध्वंस करना विचारा था जिस समय उस पापी ने तुम्हें लात मारी थी। लेकिन युधिष्ठिर ने आँख के इशारे से मुझे रोक दिया। मैं इस समय युधिष्ठिर के इशारे का ख़याल करके चुप हूँ। एक तो हम लोगों का राज-पाट छिन गया है; दूसरे अभी तक कर्ण, शकुनि, दुर्योधन, दुःशासन आदि दुष्ट वैरी जीते हैं; ये दोनों बातें काँटे की तरह मेरे हृदय में खटका करती हैं। इनके ख़याल से मेरा शरीर जला करता है। हे प्रियतमे, धर्म को न छोड़कर क्रोध को त्यागो। महाराज युधिष्ठिर अगर किसी तरह तुम्हारी इन तिरस्कार की बातों को सुन पावेंगे तो वे अवश्य ही प्राण छोड़ देंगे। उनका परलोकवास होने पर अर्जुन, नकुल और सहदेव भी जीते नहीं रह सकते। इन लोगों के विरह में मैं भी किसी तरह जीता नहीं रह सकता।

देखो, पहले के समय में महातपस्वी च्यवन ऋषि तप करते-करते वन में वल्मीकरूप हो गये थे; उस समय उनकी सहधर्मिणी राजकुमारी सुकन्या ने उनकी सेवा की और उनका साथ दिया। अनुपम रूपवती नारायणी चन्द्रसेना हज़ार वर्ष के वृद्ध की स्त्री होकर उनकी अनुगामिनी रहीं। महाराज जनक की कन्या सीता देवी को राक्षस हर ले गया, उन्हें अनेक कष्ट दिये, तो भी उन्होंने वनवासी स्वामी के साथ रहने की उत्कण्ठा नहीं छोड़ी। पाञ्चाली ! रूप और जवानी से शोभित लोपामुद्रा, अलौकिक सुख-भोग की लालसा छोड़कर, अगस्त्य ऋषि की सहधर्मिणी बनीं। द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान् की पत्नी पतिव्रता सावित्री का हाल तुमसे छिपा नहीं है। उन्होंने यमलोक तक अपने स्वामी का साथ नहीं छोड़ा। हे सुन्दरी, ये सब राजकन्याएँ जैसी रूपवती और पतिव्रता थीं, वैसी ही तुम भी हो। तुम में सभी श्रेष्ठ गुण वर्त्तमान हैं। इसलिए और थोड़े समय तक ठहर जाओ। और एक महीने के लगभग बाक़ी है। तेरहवाँ वर्ष पूरा होते ही तुम राजरानी हो जाओगी।

द्रौपदी ने कहा—प्यारे भीमसेन, मैं अत्यन्त पीड़ित और दुःखित होने के कारण ही इस तरह रो रही हूँ। युधिष्ठिर की शिकायत नहीं करती। अब इस समय बीती हुई बातों पर विचार करना व्यर्थ है। वह उपाय करो, जिससे अपने ऊपर आई हुई यह आपत्ति टल जाय। राजरानी सुदेष्णा सदा शङ्कित रहती हैं कि उनके पति राजा विराट कहीं मेरे ऊपर आसक्त न हो

जायँ [कहीं इस तरह रानी को अपने रूप का अपमान या पराभव न देखना पड़े]। राजा का साला और सेनापति कीचक स्वभाव से ही बुरे हृदय का और दुर्बुद्धि है। रानी की उक्त आशङ्का को जानकर वह सदा मुझसे अपनी प्रणयिनी होने के लिए कहा करता है। पहले पहल उसके यों कहने पर मैं क्रोध प्रकट करती थी। अन्त को क्रोध का वेग रोककर मैंने उससे कहा—अरे दुष्ट, अपने जीवन की रक्षा कर। [क्यों अपने प्राण देना चाहता है ?] मैं महाबली पाँच गन्धर्वों की पत्नी हूँ। वे क्रोधित होंगे तो तुझे शीघ्र ही अपने इस दुःसाहस के कारण यमपुरी देखनी पड़ेगी। इस पर उस दुष्ट ने उत्तर दिया—हे सुहासिनी, मैं गन्धर्वों से नहीं डरता। युद्ध में आये हुए सैकड़ों गन्धर्वों को मैं सहज ही मौत के मुँह में भेज सकता हूँ। इसलिए हे भीरु, तुम डर छोड़कर मेरी भार्या बनो।

मैंने फिर कामान्ध कीचक से कहा—रे दुराचारी, तू किसी तरह उन गन्धर्वों से नहीं लड़ सकता। मैं अच्छे कुल की, सुशील और धर्म को डरनेवाली हूँ। मैं कभी किसी के मरने की इच्छा नहीं करती। इसी से तू अभी तक जीवित है। ये बातें सुनकर वह दुष्ट ज़ोर से हँसने लगा। आज सुदेष्णा ने, कीचक की सलाह से, अपने लिए मदिरा लाने को मुझे उसी के घर भेजा। मैं जाती नहीं थी; रानी ने भाई को प्रसन्न करने के लिए मुझे समझा-बुझाकर भेज दिया। मैं कीचक के घर गई। वह दुष्ट मुझे देखते ही [अनेक प्रकार के प्रलोभन दिखाकर] खुशामद करने लगा। मेरे राज़ी न होने पर वह बलात्कार करने पर तैयार हुआ। उसके इस इरादे को जानकर मैं वहाँ से भागी और शरण की इच्छा से सभा में गई। किन्तु उस पापी ने वहीं जाकर राजा के सामने मुझे लात मारी। राजा विराट, कङ्क (युधिष्ठिर), विराट के और-और सभासद, सचिव और सब नगरवासी चुपचाप बैठे देखते रहे। मैंने राजा को और कङ्क को कठिन वचन भी कहे किन्तु कुछ फल नहीं हुआ। राजा विराट ने न तो उसको दण्ड दिया और न मना किया। कीचक राजा विराट का प्रधान सहायक है। राजा और रानी, दोनों उस पर भरोसा और अनुराग रखते हैं। कुचाली कीचक जैसा पर-स्त्रीगामी, लम्पट और विवेक-हीन है वैसा ही क्रूर, धर्मत्यागी और बहादुरी का घमण्ड रखता है। वह पापी राजा से बहुत सा द्रव्य पाकर भी सन्तुष्ट नहीं होता, सदा औरों का धन हड़प करने की धुन में लगा रहता है। वह सताये गये दुखियों के आर्त्तनाद पर ध्यान नहीं देता। वह सहज ही सुचाल छोड़कर मन-माने बुरे काम करता है। मैंने बारम्बार उसे डाँटा है। इसलिए वह दुष्ट, पापी, कामान्ध, बेहूदा कीचक अब की जो मुझको देख पावेगा और सतावेगा, तो मैं उसी घड़ी अपनी जान दे दूँगी। तुम लोग धर्म्मरक्षा की दीक्षा लिये हुए हो। यदि मेरी जान जाती रही तो अवश्य ही तुमको घोर अधर्म्म होगा। मतलब यह कि कोरी प्रतिज्ञा के पालन का ख़याल रखने से तुम अपनी भार्या की रक्षा न कर सकोगे। भार्या की रक्षा हुए बिना सन्तान की रक्षा नहीं होने की।

[सोचकर देखो, सन्तान की रक्षा कितना आवश्यक कर्तव्य है ।] सन्तान की रक्षा से अ की रक्षा होती है; क्योंकि पुरुष आप ही पुत्र-रूप से फिर जन्म लेता है इसी लिए विज्ञ पुरुषों भार्या का एक नाम जाया रक्खा है। पति पुत्र-रूप से मेरे गर्भ में जन्म लेगा, यही स करके स्त्री को स्वामी की सेवा करनी चाहिए। वर्णाश्रम धर्म के अच्छे जानकार ब्राह्मणों से सुना है कि शत्रु को दण्ड देने से बढ़कर क्षत्रिय का और धर्म नहीं है। [इसलिए प्रति पालन के अनुरोध से भयङ्कर शत्रु कीचक को यथोचित दण्ड न दिया जायगा तो तुम लोगों सर्वोत्तम धर्म की विशेष हानि होगी।] हे महाबली, दुष्ट कीचक ने धर्मराज युधिष्ठिर के तुम्हारे आगे ही मुझे लात मारी है। तुमने पहले भयानक जटासुर से जैसे मेरी रक्षा की और भाइयों की सहायता से जयद्रथ को जैसे नीचा दिखाया है, वैसे ही इस समय पापी की को मारो। हे भरत-कुलतिलक ! कामान्ध पापी कीचक, राजा को प्रिय होने के कारण, लिए अनेक विपत्तियों की जड़ हो गया है। पत्थर पर पटके गये मिट्टी के घड़े की तरह तुम इसी घड़ी उसे चूर-चूर कर डालो। जो सूर्योदय के समय तक वह जीता रहेगा तो मैं विष पीकर प्राण दे दूँगी। कीचक के वशीभूत होकर जीते रहने की अपेक्षा तुम्हारे सामने मर जाना ही मुझे अच्छा जान पड़ता है।

वैशम्पायन कहते हैं—इस प्रकार करुणाजनक दीन वचन कहकर, भीमसेन की छाती पर सिर रखकर, द्रौपदी रोने लगीं। भीमसेन ने दुःख से पीड़ित सुन्दरी द्रौपदी को गले से लगा लिया। फिर युक्तिपूर्ण वचनों से द्रौपदी को दिलासा देकर अपने हाथ से भीमसेन ने उनके आँसू पोंछे। वे क्रोध के मारे ओठ चाटने लगे, मानों कीचक उनके सामने ही खड़ा हो। इ बाद दुःखित द्रौपदी से भीमसेन ने कहा।

बाईसवाँ अध्याय

द्रौपदी से भीमसेन की सलाह। कीचक का मारा जाना

भीमसेन ने कहा—प्रिये, मैं वही करूँगा जो तुम कह रही हो। दुष्ट कीचक को भाई-बन्धुओं सहित मार डालूँगा। हे मधुरहासिनी, तुम कल सन्ध्या के समय कीचक से मिलना और बेधड़क उससे मिलने के लिए राज़ी होकर एक स्थान निश्चित कर लेना। राजा विराट की जो नाट्यशाला है, वहाँ कन्याएँ दिन को नृत्य आदि करके रात को अपने-अपने घर चली जाती हैं। वहाँ मज़बूत पलँग पर बढ़िया सेज भी लगी हुई है। ऐसा उपाय करो कि उस नाट्यशाला में रात को कीचक किसी तरह पहुँच जाय। [वहाँ मैं स्त्री-वेष में छिपा हुआ बैठा रहूँगा।] मैं उसे, वहीं पर मारकर, उसके मरे हुए पुरखों के पास भेज दूँगा। सावधान, कीचक से मिलकर वादा और बातें करते तुमको कोई देख न ले।

वैशम्पायन कहते हैं—इस प्रकार बातचीत करके दुःख के मारे आँसू बहाते हुए भीमसेन और द्रौपदी दोनों उस भयानक रात के बीतने और सबेरा होने की राह देखने लगे। दूसरे दिन सबेरे कीचक राजभवन में गया। वहाँ द्रौपदी को देखकर कहने लगा—सैरन्ध्री, सभा के बीच महाराज के सामने ही मैंने तुमको गिराकर लात मारी, तो भी कोई तुम्हारी रक्षा नहीं कर सका। मैं बहुत ही बली हूँ, इसी कारण मेरे हमले से तुम्हें बचाने की किसी को हिम्मत नहीं हुई। मैं इस राज्य का सेनापति हूँ। सारी सेना मेरा हुक्म मानती है। असल में मैं ही मत्स्यराज्य का स्वामी हूँ। विराट तो कहने भर को मत्स्यदेश के राजा कहलाते हैं। हे पतली कमरवाली, तुम मुझ पर प्रेम करके परम सुख भोगो। हम लोगों का परस्पर मिलन होने पर मैं जन्म भर तुम्हारे चरणों का सेवक बना रहूँगा। तुम्हें इसी घड़ी असंख्य सुवर्ण-मुद्रा और अनमोल रत्न दूँगा। तुम्हारी सेवा के लिए हज़ारों दास-दासियाँ नियुक्त कर दूँगा। [तुम्हारी सवारी के लिए] सुन्दर रथ तैयार रहेगा जिसमें खच्चरियाँ जुती होंगी।

द्रौपदी ने कहा—कीचक, हम लोगों के मिलने में अब कुछ खटका नहीं है। डर इतना ही है कि जो यह बात प्रसिद्ध हो जायगी तो वे यशस्वी गन्धर्व सुन लेंगे। इसलिए जो तुम यह प्रतिज्ञा करने को राज़ी हो कि हम दोनों के इस गुप्त मिलन को तुम्हारे भाई या मित्र कोई न जान सकेंगे, तो मैं तुम्हारा कहा करने को तैयार हूँ। कीचक ने प्रसन्नता प्रकट करके कहा—हे सुन्दरी, तुम जैसा कह रही हो वैसा ही होगा। सुन्दरी, मैं तुमसे मिलने के लिए अकेला तुम्हारे उस सूने घर में आऊँगा जहाँ तुम रात को सोती हो। तब तो वे सूर्य के समान तेजस्वी गन्धर्व कुछ हाल न जान सकेंगे। द्रौपदी ने कहा—नहीं जी, ऐसा न करो। मत्स्य-राज की स्थापित की हुई नाट्यशाला में दिन को कन्याएँ नाच-गाकर रात के समय अपने-अपने

घर चली जाती हैं। उस निर्जन स्थान को अवश्य ही गन्धर्व न जानते होंगे। इसलिए तुम घोर अँधेरी रात के समय वहाँ मुझसे मिलने आओ तो हम दोनों लोक-लाज से बच जायँ।

वैशम्पायन कहते हैं—महाराज जनमेजय, कीचक से यों बातचीत हो चुकने पर द्रौपदी को वह आधा दिन एक महीने के बराबर जान पड़ने लगा। उधर कामबाण-पीड़ित दुष्ट कीचक ख़ुशी के मारे फूला नहीं समाता था। उसे नहीं मालूम हुआ कि द्रौपदी उसके लिए साक्षात् मृत्यु है। वह द्रौपदी से वादा करके अपने घर गया और चन्दन, माला, गहने आदि से अपने शरीर की शोभा बढ़ाने में लग गया। उस समय विशाल नेत्रोंवाली द्रौपदी की याद आने से रात होने में जो थोड़ा सा समय बाक़ी था वह कीचक को बहुत ही अधिक जान पड़ने लगा। जैसे दीपक बुझने से पहले ख़ूब जगमगा उठता है, वैसे ही उस समय कीचक बहुत आनन्दित और शोभित हुआ। दुष्ट कीचक काम विह्वल और मिलने की ख़ुशी में उन्मत्त सा हो उठा। द्रौपदी की बातों पर उसको पूरा विश्वास था। इस ख़याल में वह इतना मग्न हो गया कि दिन कब बीत गया, इसकी भी उसको ख़बर नहीं हुई।

अब सन्ध्या का समय आ गया। पतिव्रता द्रौपदी ने रसोई-घर में जाकर भीमसेन से कहा—हे शत्रुदमन, तुम्हारी आज्ञा से मैंने कीचक को नाट्यशाला में बुलाया है। वह दुष्ट रात को वहाँ अकेला जायगा, उसी समय तुम उसको मार डालना। वह दुष्ट बड़ी शेख़ी से हर घड़ी गन्धर्वों (पाण्डवों) का अनादर किया करता है; इसलिए तुम आज ही उसे मार डालो। गजराज जैसे सहज ही कमल के पेड़ को उखाड़कर रौंद डालता है, वैसे ही तुम उसे मारकर मेरा दुःख दूर करो; मेरे आँसू पोंछो; वंश की मर्यादा बचाओ और अपना कल्याण करो।

भीमसेन ने कहा—पाञ्चाली, प्रसन्नता की बात है कि तुम बिना किसी विघ्न के सब काम ठीक कर आई हो। यहाँ आकर तुमने मुझे यह प्रिय संवाद दिया, इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। हे कल्याणी, मैं यही ख़बर सुनना चाहता था। इसके सिवा मुझे और कोई सहायता न चाहिए। पहले हिडिम्ब दानव को मारते समय मुझे जैसी प्रसन्नता हुई थी वैसी ही प्रसन्नता इस समय भी, तुम्हारे मुँह से यह शुभ संवाद सुनकर, हुई है। मैं इस समय तुम्हारे आगे सत्य, धर्म और प्यारे भाइयों की सौगन्द खाकर कहता हूँ कि जैसे इन्द्र ने वृत्रासुर को मारा था वैसे ही मैं दुष्ट कीचक को एकान्त में या सबके सामने, जहाँ मिलेगा, मार डालूँगा। इसके लिए यदि सब मत्स्यराज्य के वीर लड़ने आवेंगे तो उन्हें भी मारूँगा। अन्त को दुष्ट दुर्योधन को मारकर पृथ्वीमण्डल का राज्य अपने हाथ में लूँगा। राजा युधिष्ठिर राजा विराट की सेवा भले ही करते रहें, पर मैं यह काम अवश्य करूँगा।

द्रौपदी ने कहा—स्वामी, सब काम सावधानी से करना। मेरे लिए तुमको प्रतिज्ञा न तोड़नी पड़े। गुप्त रूप से ही कीचक को मारना, कोई जानने न पावे।

भीमसेन ने कहा—हे भीरु, तुम जैसा कहती हो मैं वैसा ही करूँगा। मैं आज शाम को छिपकर अनधिकार-चेष्टा करनेवाले उस दुरात्मा के मस्तक को वैसे ही कुचल डालूँगा जैसे हाथी बेल के फल के टुकड़े-टुकड़े कर डालता है। मैं उसको, भाई-बन्धुओं सहित, मार डालूँगा।

वैशम्पायन कहते हैं—फिर रात होने पर भीमसेन नाट्यशाला में गये। मृग का शिकार करने की इच्छा रखनेवाले सिंह के समान वे छिपकर, घात लगाकर, बैठ रहे। दुर्बुद्धि कीचक भी मनमाना शृङ्गार करके—साज-सामान करके—सैरन्ध्री से मिलने को उसी समय वहाँ पहुँचा। भीम पराक्रमवाले भीमसेन जिस सूने स्थान में बैठे हुए उसकी राह देख रहे थे उसे ही द्रौपदी के मिलने का स्थान समझकर कामान्ध कीचक उसके भीतर गया। उसे क्या मालूम था कि द्रौपदी के अपमान से उत्पन्न क्रोध की आग से प्रज्वलित भीमसेन, साक्षात् मृत्यु की तरह, वहाँ लेटे हुए हैं। भीतर जाकर, पास पहुँचकर [जलते हुए अग्निकुण्ड में गिरने के लिए उतारू पतङ्ग या सिंह को छूनेवाले पशु की तरह] कीचक ने द्रौपदी के धोखे भीमसेन के शरीर पर हाथ रक्खा। उसका हृदय आनन्द से मत्त हो उठा। उसने हँसकर कहा—प्रिये, आज मैं तुम्हारे लिए बहुत सी अनमोल सामग्री—धन-रत्न-कपड़े-गहने आदि—निकालकर रख आया हूँ। मेरे घर में सैकड़ों दास-दासियाँ हैं, रूप-लावण्यवती युवती स्त्रियाँ हैं। अनेक मणि-रत्न आदि मेरे रनिवास की शोभा बढ़ाते हैं। तुम्हारे समागम की लालसा से वह रनिवास छोड़कर मैं यहाँ आया हूँ। हे सुन्दरी, मेरे अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्रियाँ मुझको अद्वितीय सुन्दर और प्रियदर्शन कहकर सदा मेरी बड़ाई किया करती हैं।

भीमसेन ने कहा—मेरा परम सौभाग्य है कि तुम ऐसे प्रियदर्शन हो। तुम्हारी यह अपनी प्रशंसा भी ठीक है! किन्तु तुमने पहले कभी ऐसे कोमल स्पर्शसुख का अनुभव न किया होगा। अहा! तुम तो बड़े कामकलानिपुण हो! अच्छे रसिकशिरोमणि हो! कैसे स्पर्शरस के जानकार हो! तुम्हारे सदृश स्त्रियों को रिझानेवाला दूसरा नहीं है। वैशम्पायन कहते हैं कि हे जनमेजय, परमपराक्रमी भीमसेन यों कहकर एकाएक उछल पड़े और फिर हँसकर अपने को प्रकट करते हुए कहने लगे—रे पापी! सिंह जैसे गजराज पर हमला करता है, वैसे ही मैं तुझे खींचकर, तेरी बहन के सामने ही तुझे धरती पर पटककर, रगड़ूँगा। तेरे मर जाने पर सैरन्ध्री बेखटके हो जायगी, और उसके स्वामी गन्धर्व भी सन्तुष्ट होंगे।

महाबली भीमसेन ने यों कहकर चटपट उसके बाल पकड़ लिये। श्रेष्ठ बलवान् कीचक ने भी उसी घड़ी अपने बाल छुड़ाकर वेग से भीमसेन को भुजाओं में भर लिया। इस तरह क्रोध से भरे दोनों वीर परस्पर भिड़ गये। वसन्त ऋतु में हथिनी के लिए काम से उन्मत्त दो गजराज जैसे परस्पर युद्ध करें, या पहले बाली और सुग्रीव ने जैसा दारुण युद्ध किया था, वैसे ही वे दोनों भयानक युद्ध करने लगे। दोनों को समान रूप से जय की इच्छा थी, दोनों ही
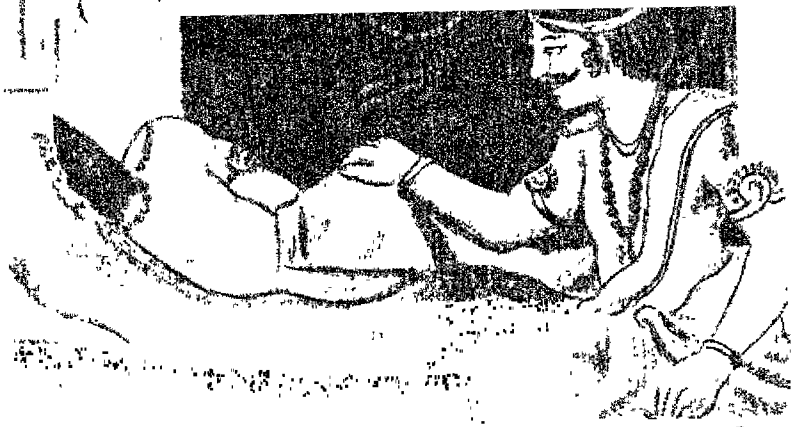
कीचक ने द्रौपदी के धोखे भीमसेन के शरीर पर हाथ रक्खा।—पृ० १४

.चक की छाती पर चढ़ कर भीमसेन उसे बार बार ज़ोर से रगड़ने लगे।—

भीमसेन ने हाथों से कीचक की छाती की हड्डियाँ और पसलियाँ तोड़ दीं।—पृ० १४०५